शेखर : एक जीवनी

अज्ञेय कथा साहित्य विमर्श

(खण्ड-21)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

शेखर : एक जीवनी

अज्ञेय-कथा साहित्य विवेचन

(खण्ड-21)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उप्र.)

पृष्ठभूमि	3
प्रेरणा	5
शेखर की नींव	6
रचना-काल	7
भूमिका में महत्वपूर्ण संकेत	9
शेखर: एक जीवनी: रचना रूप और व्यक्तित्व	11
स्मृति की भूमिका	24
जीवन दृष्टि	24
शेखर: एक जीवनी- उपन्यास का कलेवर	25
वासना और प्रेम	32
जेल के साथी	45
शशि और शेखर	47
संबंधों की पृष्ठ भूमि	48
भावात्मक स्तर	48
प्रेम और वासना का दर्शन	58
शेखर का आत्म-निरीक्षण: उसकी महानता	61
उपन्यास की मूल वस्तु	65
जिज्ञासाएं आरोप एवं आक्षेप	66
निष्कर्ष	66

शेखर : एक जीवनी

(उपन्यास साहित्य)

पृष्ठभूमि :

अज्ञेय के क्रान्तिकारी जीवन के अनुभवों और अनुभूतियों की कलात्मक उपलब्धि है- 'शेखर : एक जीवनी'। ' शेखर : एक जीवनी' उच्च कोटि का उपन्यास है, जो रचनात्मक साहित्य की अनेक विधाओं का योगफल है।

अपने क्रांतिकारी जीवन के बारे अज्ञेय का वक्तव्य हमारे लिये महत्त्वपूर्ण है अत: उस के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं-

●'यह तो कॉलेज में ही था, तभी क्रांन्तिकारी दल में सम्मिलित हो गया था, xxx कुछ उद्देश्य अपने सामने रखे जिन में क्रांति का भी था। और एक भारत में गणतंत्र की स्थापना की बात भी थी। और उस के लिए हिंसा को त्याज्य भी नहीं माना गया था। सबसे पहले कुछ प्रचार करने का और कुछ गुप्त संगठन करने का और शस्त्र संग्रह का काम हम लोगों ने आरंभ किया। फिर यह जो छोटा सा दल था, एक बड़े दल के साथ जुड़ गया जिस का कि एक भारतव्यापी संगठन था, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी या एसोसिएशन, दोनों ही तरह उसका नाम लिया जाता था।'[(1)]

●'इस दल से जुड़े हम उस समय जब कि भगत सिंह वगैरह जेल में थे और उन को छुड़ाने का उपक्रम लाहौर में हो रहा था, यह बात लाहौर की ही है, मैं वहीं कालेज में था भी। उन को छुड़ाने के आयोजन के सिलसिले में ही चन्द्रशेखर आज़ाद से, भगवती चरण वोहरा से, यशपाल से मेरा परिचय हुआ। धन्वन्तरी से और उस समय जो योजना थी जो कि सफल नहीं हुई, उस में मुझे, ट्रक चलाने का काम सौंपा गया था, जिस में जेल से छुड़ाने के बाद भगत सिंह को ले जाया जाता।XXXलेकिन फिर कई कारणों से वह सारी

योजना ही असफल हो गई, छोड़ दी गई और फिर हम सब लोगों को लाहौर से चले भी जाना पड़ा। '[2]

- 'यह बात दिल्ली की है, तब सज़ा अभी नहीं हुई थी। हमारा दिल्ली षड़यंत्र केस का मुक़दमा यहाँ चल रहा था। XXX एक केस अमृतसर में चल रहा था, आर्म्स एक्ट के अधीन और दिल्ली में षड़यंत्र का केस था। अभियोग, आरोप तो बहुत से थे और ऐसे भी थे जिनमें मृत्यु-दण्ड की भी संभावना हो सकती थी। ऐसा कुछ हुआ नहीं। अंत में तो षडयंत्र वाला मुक़दमा वापस ले लिया गया, दो-तीन व्यक्तियों को छोड़कर सज़ा अन्त में नहीं हुई, हाई कोर्ट में सब छूट ही गए। '[3]

प्रेरणा :

चरम संकट का बोध 'शेखर : एक जीवनी' की मूल प्रेरणा है। 'अपने-अपने अजनबी' की मूल प्रेरणा के संबंध में रघुवीर सहाय के एक सवाल के जवाब में अज्ञेय ने बताया-

'पहले तो लगभग वहीं से मिली जहाँ से 'शेखर' का आरम्भ हुआ। यानी जब, मेरे स्वयं के सामने अपने जीवन में, यह संभावना थी कि मुझे मृत्यु-दण्ड भी मिल सकता है, तब अपने जीवन का अर्थ सोचने की एक जरूरत महसूस हुई। और जिस परिणाम पर मैं पहुँचा उस में एक यह भी था कि बड़े सहज भाव से इस संभावना को स्वीकार किया जा सकता है, जो कि उस परिणाम का लगभग उलटा था, जिस से 'शेखर' प्रारंभ होता है। वहाँ पर इस बात को लेकर कष्ट है, लेकिन जब मैं दूसरे छोर पर पहुँचा- कि इस को तो एक सहज प्रक्रिया के अंग के रूप में स्वीकार करना चाहिए, चाहे किसी भी जगह जीवन समाप्त हो जाए।'(4)

'शेखर' की भूमिका में भी शब्द भेद से इस तथ्य की पुष्टि होती है-

'जब आधी रात को डाकुओं की तरह आकर पुलिस मुझे बन्दी बना ले गयी, और उस के तत्काल बाद पुलिस के उच्च अधिकारियों से मेरी बात-चीत फिर कहा-सुनी और फिर थोड़ी-सी मार पीट भी हो गई, तब मुझे ऐसा दीखने लगा कि मेरे जीवन की इति शीघ्र होने वाली है। फाँसी का पात्र मैं अपने को नहीं समझता था, न अब समझता हूँ लेकिन उस समय की परिस्थिति और अपनी मन: स्थिति के कारण यह मुझे असंभव नहीं लगा।'(5)

'शेखर' की नींव- 'शेखर' कैसे/किस रूप में लिखा गया :

'शेखर' की भूमिका में अज्ञेय उपर्युक्त का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं-

उस रात के बाद 'महीना तक कुछ नहीं हुआ। एक मास बाद जब मैं लाहौर किले से अमृतसर जेल ले जाया गया, तब लेखन सामग्री पाकर मैं ने चार पाँच दिन में उस रात में समझे हुए जीवन के अर्थ और उसकी तर्क-संगति को लिख डाला। पेंसिल से लिखे हुए वे तीन एक-सौ पन्ने 'शेखर : एक जीवनी' की नींव हैं। उस के बाद नौ वर्ष से अधिक मैं ने उस प्राण-दीप्ति को एक शरीर दे देने में लगाए हैं।'(6)

'रेडियो-जीवनी' में उपर्युक्त तथ्य का विस्तृत ब्यौरा इस रूप में उपलब्ध है। अज्ञेय के ही शब्द हैं-

'हाँ, तो दो खण्ड सामने आए, न, ('शेखर : एक जीवनी' के) और एक तीसरा खण्ड और है जो अप्रकाशित है। तो पहली बार वह मैं ने लिखा हवालात से, जेल जाते ही जब लिखने की सामग्री मिली और यह संभावना हुई कि कुछ लिख कर जल्दी से कही ' 'बाहर भेज दे सकते हैं, या छिपा दे सकते हैं, या सुरक्षित रख सकते हैं तब मैंने तीन-चार दिन में उस का एक रूप लिख डाला, कुछ पेन्सिल से, कुछ स्याही मिली तो स्याही से, कुछ यों ही अंधेरे में अटकल से कापी पर, लेकिन कुछ लिखता चला गया, इसलिए कि लगा कि यह जो इतना तीव्र अनुभव है ठण्डा पड़ जाने से पहले इस को लिख लेना चाहिए, फिर यह चाहे जिस रूप में काम आए। या कि मेरे काम न आए तो किसी के भी काम आए। वह पड़ा रहा। उस के कुछ महीनों के बाद फिर उस को देखा और थोड़े-बहुत उस में संशोधन भी किए। और वह जो पहला रूप था, वह कुछ हिन्दी में, कुछ अंग्रेजी में, कुछ खिचड़ी में, जैसे भी वह भाव, कच्चे-पक्के विचार भी मन में उठते रहे, उसी रूप में मैं लिखता गया। लेकिन वह उपन्यास नहीं था। वह अपने एक तीखे अनुभव से उबरने की एक कोशिश थी, जो कि उपन्यास के लिए कच्चा माल तो ज़रूर हो सकती है, लेकिन उपन्यास नही थी।'(7)